घनश्याम अग्रवाल

दो माँएँ

ई-मेल:hasyakavighanshyamagrawal@gmail.com

उन दोनों के एक-एक बिटिया थी। जिसे पालने के लिए उन्हें नौकरी की सख्त जरूरत थी। नौकरी मिल भी रही थी। नौकरी अच्छी थी और तनख्वाह उससे भी अच्छी। मगर उसे हासिल करने के लिए एक शर्त थी। या तो मैनेजर को दस लाख दो या फिर खुद को उसके हवाले कर दो।

पहली ने एक पल अपनी बच्ची को देखा फिर चली गई। वापिस आई तो उसके हाथ में नियुक्ति-पत्र था। उसने एक गर्व के साथ बच्ची की आँखों में झाँका और मन ही मन बोल उठी—"देख बेटी, मैंने ये घर बेचकर नौकरी हासिल की है। तेरी माँ ने घर बेच दिया मगर खुद को नहीं बेचा। नौकरी बहुत अच्छी है। तेरे बड़े होने तक घर तो बन ही जायेगा।"

उसने बच्ची को चूमा और अपने सीने से लगा लिया।

दूसरी के पास घर नहीं था। उसने भी एक पल बच्ची को देखा, फिर चली गई।

वापिस आई तो उसके हाथ में भी नियुक्ति-पत्र था। उसने भी एक गर्व के साथ बच्ची की आँखों में झाँका और मन ही मन बोल उठी—"देख बेटी, मैंने खुद को बेचकर ये नौकरी हासिल की है। क्या करती, मेरे पास बेचने को घर नहीं था। नौकरी बहुत अच्छी है। तेरे बड़े होने तक घर तो बन ही जायेगा।" एक पल वह रुकी, फिर बोली—"और हाँ बेटी, जब तूने बड़ी होगी न, तब तू नौकरी के लिए इस घर को बेच देना।"

कहकर उसने भी बच्ची को चूमते हुए अपने सीने से लगा लिया।

प्यार का एक पल

दोनों मुल्कों में दुश्मनी थी, इसलिए जब सरहद के आसपास के गाँवों के लोग जाने-अजाने दूसरी तरफ निकल जाते तो सैनिक उन्हें बन्दी बनाकर जेलों में ठूँस देते। दोनों ओर की जेलों में कई स्त्री-पुरुष बन्द थे।

धीरे-धीरे दोनों मुल्कों में जब तनाव कम हुआ तो सद्भावना दर्शाते दोनों मुल्कों ने तय किया कि एक खास समारोह कर, साठ-साठ बन्दियों को छोड़ दिया जाएगा। दोनों ओर के बन्दी अपने-अपने मुल्क में जाने को बेकरार हो उठे।

निश्चित दिन समारोह हुआ। सरहद पर दोनों मुल्कों के झण्डे लहरा रहे थे। सरहद के गाँववाले अपने रिशतेदारों-परिचितों को लेने इकट्ठे हो गए। ढोल-ताशे बज रहे थे। लोग फूलमालाएँ लिए खड़े थे। फिज़ाओं में भाईचारे और मुहब्बत के नारे गूँज रहे थे।

ठीक समय पर बिगुल बजा और उधर के साठ लोगों को छोड़ा गया। फिर बिगुल बजा, अबके इधर से साठ लोगों को छोड़ा गया। एक साथ कदम-दर-कदम बढ़ाते इधर के साठ उधर जा रहे थे और उधर के साठ इधर आ रहे थे। एक समय ऐसा भी आया जब दोनों ओर के लोग आमने-सामने हुए। ऐसे में एक पल को एक की नज़र सामने के दूसरे से टकराई।

इस पार इकसठ आ गए। उस पार उनसठ चले गए।